International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 2, February 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

महात्मा गाँधी का शिक्षा दर्शनः–

Dr. Fozia Bano
Associate Professor
Department of History
Shia P.G. College, Lucknow

सारांशः–

vk/kfud Hkkjr ds fuekZ.k esa xka/kh th dk cgqr ;ksxnku gS u dsoy Hkkjrh; **शिक्षा शास्त्रों वरन् विश्वप्रसिद्ध शिक्षा शास्त्रियों में महात्मा गाँधी का अग्रणी स्थान है। वे बुनियादी शिक्षा के जन्मदाता थे। उनके विचारों के अनुसार मनुष्य जीवन से जुड़े** ik;% lHkh **विषय में शिक्षा का महत्वपूर्ण** LFkku ikrk FkkA egkRek xka/kh lR; vkSj **अहिंसा के पुजारी थे। वे समस्त विश्व को एक प्रेम सूत्र में बाँधना चाहते थे जब गाँधी जी अंगेजो में भारत वर्ष को आजाद कराने के लिए सत्याग्रह कर रहे थे उस समय भी** os vxzstksa esa ?k`.kk **नही करते थे। गाँधी जी बुनियादी शिक्षा में बहुत परिर्वतन करना चाहते थे। तथा शिक्षा में व्यवसायिक शिक्षा तथा नारी शिक्षा के भी समर्थक थे। बुनियादी शिक्षा से पूर्व भी उन्होंने विदेश में शिक्षा सम्बन्धी अनेक प्रयाग किये थे शिक्षा** esa og uSfrdrk rFkk vk/;k**त्मिकता को भी अत्याधिक महत्व देते थे। गाँधी जी शिक्षा का विकास की प्रकिया मानते थे वे शिक्षा का राजनीतिक,** lkekftd, vkfFkZd rFkk uSfrd izxfr dk vk/kkj ekurs FksA **गाँधी जी अफीका प्रवास लगभग 20 वर्ष का रहा।** bl chp dsoy ,d ckj jog Hkkjr vk,A vQhdk izokl xka/kh th ds thou esa vfoLej.kh; cu x;kAxka/kh th ,d ,sls deZ;ksxh Fks ftUgksaus viuss fopkjksa dks fyfic) rks de fd;k gS fd;kfUor vf/kd fd;k gS lS)kfUrd i{k dh vis{kk 0;kogkfjd i{k ij vf/kd cy fn;k gSA

xka/kh th vfgalk ds iqtkjh FksA mudh vfgalk cgqr 0;kid gSA fdlh thoo dh gR;k u djuk ek= gh vfgalk ugh vfirq eu, opu vkSj deZ ls fdlh dk gkfu igqpkuk vfgalk g,S ekuo dk /keZ gS fd og iki ls vlg;ksx djs vU;k; ,oa vR;kpkj dk fojks/k djsA vR;kpkjh ds izfr izfrdkj dh Hkkouk cukus dk rkRi;Z Lo;a ij vkdze.k djus ls gS, D;ksafd vR;kpkjh Hkh ,d ekuo gSA izkf.kek= ds lkFk ,dhdj.k d **लिए आत्मशुद्धि अपेक्षित है। आत्मशुद्धि का साधन अनशन है। अनशन**

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 2, February 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

nlj 0;fDr dk viu dk viu gB ij iu% fopkj dju d fy, ck/; djrk gA

गांधी की शिक्षाः—

शिक्षा मनुष्य की नैसर्गिक चेष्टा और उसकी विकासशील प्रवृत्ति है। मनुष्य आदिकाल ls lh[krk vk jgk gA tk dN mlu lh[kk, **उसे शिक्षा का रूप दिया। शिक्षा** ekuo&lekt dh lfpr lh[k gA og mls ijEijk vkj ifjfLFkr d vu|lkj xg.k djrk gA **शिक्षा कोई ऐ**lh oLr ugh, tk fdlh inkFk ;k cht d :Ik e inku dh tk,A ;g rk ,d idkj dh pruk g, **जिसे मनुष्य स्वयं प्राप्त करता है। यह एक गतिशील विषय ह**, bldk :Ik fLFkj ughA bldh /kkjk e ,d LokHkkfod iokg gkrk gA ;g pru g tM ughA bu ckrk ls ge lgt gh vuqeku yxk ldr g fd **किस प्रकार शिक्षा बच्**pk d 0;fDrRo d fuek.k dk gh ugh, **अपितु समाज और राष्ट्र के निर्माण का भी आधारस्तम्भ है। जो राष्ट्र शिक्षा में जितना पिछड़ा रहता है,** og lH;rk e Hkh mruk gh ihN jgrk gA **विज्ञान के आविष्कारों का लाभ उसी राष्ट्र को** feyrk g, **जो सुशिक्षित है। आज प्रत्यक राष्ट्र अपना प्रमुख कर्तव्य समझता है कि उसके नागरिक शिक्षित हों। जिस देश की जनता में जात—पाँत के जितने ही जटिल प्रश्न छुआछूत तथा धार्मिक सम्प्रदायों के भेद—भाव होते हैं, उस देश की जनता उतनी** gh ijk/khu, n[kh vkj vfodflr jgrh gA

इसका निराकरण शिक्षा क प्रसार दृारा ही किया जा सकता है। शिक्षा प्रचार से एक मनुष्य दूसरे मनुष्य को अपने—जैसा ही व्यक्ति मानने लगता है। वह दूसरे के व्यक्ति dk mruk vknj djuk lh[k yrk g, ftruk fd nljk ls og viuk vknj pkgrk **है। शिक्षा मनुष्य का चरित्र उदार बनाती है, जिससे हदय विशाल ह**k tkrk g rFkk **उसके लिए समस्त राष्ट्र अपने परिवार जैसा ही दिखलाई देता है।**

0र्धा शिक्षा सम्मेलन—

22&23 vDVcj 1937 dk o/kk d ekjokMh gkbLdy ¼ vc uoHkkjr fo|ky;½ e **महात्मा गांधी के सभापतित्व में भारत के शिक्षा शास्त्रियों की एक सभा बुलाई गई, जिसमें शिक्षा सम्बन्धी अपना मत प्रकट करते हुए उन्होंने बतलाया कि शिक्षा की वर्तमान पद्धति (अंग्रेजी शिक्षा & पद्धति अथवा परम्परागत शिक्षा—पद्धति) दृारा भारतीय जनसमाज को शिक्षित करने के प्रयास से हम अपने उचित लक्ष्य की उपलब्धि नहीं कर** ldrA ble fo|kfFk;k dk ufr**क उत्थान सम्भव नही। इसमें विदेशी भाषा को महत्व दिया गया है और मातृभाषा का स्थान गौण है।**

अंग्रेजी शिक्षा—पद्धति पुस्तक प्रधान अर्थात् बौद्धिक और साहित्यिक है। यहाँ प्रयोगों को doy jVk;k tkrk gA vr% ;g i)fr thou dh okLrfodrk ls cgr nj rFkk

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 2, February 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

df=e g। इसमें विषयों का मौखिक वर्णन होता है। उस वर्णन को समझने के लिए dkbZ iR;{k oLrq gekjs le{k ugha j[kh tkrh gSA ;g i)fr mPp oxZ ¼/kuh oxZ½ ds fy, gh lEHko gSA blesa 0यावाहारिक कुशलता और सामाजिक निपुणता का अभाव है। fo|kFkhZ निष्क्रिय श्रोrk gSAorZeku शिक्षा किसी प्रकार की जीविका–वृत्ति के लिए मार्ग प्रदर्शित नहीं करती, blesa fdlh izdkj ds उत्पादनशील कार्य की क्षमता नहीं है। यहाँ शारीरिक श्रम को हेय दृष्टि से देखा जाता है, ftlds dkj.k csdkjh dh leL;k c<rh tk jgh gSA xka/kh th dk dguk Fkk] ;FkkFkZ vkSj lR; Fkk, क्योंकि अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली का लक्ष्य भारतीय जनता में व्यापक शिक्षा का प्रचार नहीं, vfirq viuk ljdkjh कार्य–संचालन के लिए किरानियों और दफतरियों की आवश्यकता थी।

Mjcu ds iz;ksx%&

^lR; ds esjs iz;ksx^ dks egkRek गांधी ने अपने जीवन की प्रयोगशाला माना है। उससे ekywe iM+rk gS fd mUgsa iz;ksxksa ls fdruk izse Fkk vkSj og iz;ksx os mldh pjelhek rd djrs FksA iz;ksxksa dk egRo gekjs fy, cgqr gS vkSj cfYd शिक्षा उन iz;ksxksa dk gh idj.kke FkhA Xkka/kh th 1904 esa Mjcu x,A ogka igqpdj mUgsa ^bf.M;u vksihfu;u^ dh dk;Zfof/k dks 0;ofLFkr djuk FkkA mUds fe= iksyd, tks mUds lkFk jg pqds Fk, स्टेशन पर पहुँचाने आए और रस्किन की पुस्तक ^vuVw fnl ykLV^ xka/kh th ds gkFk esa nh ;g jfLdu dh igyh iqLrd Fkh, tks xka/kh th us i<+h FkhA
शिक्षा के लिए वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे–

1 बालकों की शिक्षा में चरित्र–शिक्षा का भी योग रहे।

2 केवल बौद्धिक शिक्षा ही सम्पूर्ण नहीं है, बल्कि उसके साथ श्रम भी शिक्षा का मुख्य vax gSA

3 शिक्षा के आविधिक साधन घर की सहायता का योग प्राप्त करना भी अनिवार्य gSA

4 lknxh lsokHkko vkfn भी शिक्षाप्राप्ति के साधन हैं।

tksgkUlcxZ dk iz;ksx&

Mjcu esa xgLFkh esa gj&Qsj fd, , exj tksgkUlcxZ esa ^lokn;^ ds fopkjks us mues dkQh ifjorZu djk,A [kpZ vf/kd gksus ds dkj.k mlds fopkj lknxh dh vksj c<+sA ifjorZu fuEufyf[kr Fks&

1 बाजार की रोटी की अपेक्षा घर पर रोटी बनाना शुरू कर दिया।

2 मिल का आटा छोड़ हाथ से पिसा आटा इस्तेमाल करना शुरू कर दिया।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 2, February 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

3 gkFk ls pykus dh pDdh lkr ik.M es [kjhnh A ;g pDdh pykus es Jherh ikykd, cPPkk, xka/kh th, dLrqjck & dHkh &dHkh yxrs FkA cPps rks [ksy le>dj blesa lg;kx nsrs FkA

4 cPpks ds pfj= es tks dfe;k gks, os ifr&ifRUk dh dfe;ks dk ifj.kke gA

fQfuDl vkJe es i;kx&

xka/kh th ^bf.M;u vksihfu;u^ dk ,d [kr es yx tus dh lkpus yx, tgka iR;sd 0;fDr ifjJe djs leku oru HkkDrk gk एवं अवकाश के समय प्रेस की देखHkky करे। मि० वेस्ट ने गांधी जी की इस राय का समर्थन किया। प्रत्येक का मासिक वेतन 3 ik.M r; fd;k x;kA

शांति निकेतनः—

गांधी जी को भारत आने के पश्चात् शान्ति—निकेतन में रहने का अच्छा मौका मिला। ogka ds अध्यापकों एवं विद्यार्थियों की उन पर सदैव प्रेमदृष्टि रही। वहीं काका साहब dkysydj ls mudk iFke ckj ifjp; gqvkA ogka muds Bgjus dh vyx 0;oLFkk dh xbA mudh e.Myh dh n[kHkky Jh exuyky xka/kh dj jgs FkA ogka fQfuDl vkJe ds lEiw.k fu;eks dk cMh ckjhdh ds lkFk ikyu gks jgk FkkA mlh le; ogka ,.Mज एवं हपयर्सन दोनों थे। प्रेम लगन और सहनशीलता की सोंधी सुगन्ध से वहाँ dk lkjk okrkoj.k egd jgk FkkA

Lkkcjerh vkJe%&

Ekbl 1915 es xka/kh th us viu fe=ks ds vkxg ij fQfuDl vkJe dh LFkkiuk dh FkhA ;gka ?kjsyw m/kोगों को शिक्षा का आधार मkudj c<+k;k x;kA ogha drkbZ&cqukbZ और बढ़ई का कार्य सबके लिए था। यहाँ से गांधी जी की बुनियादी या बेसिक शिक्षा की योजना जनता के सामने रखने का कार्य शुरू होता है।

Xkqtjkr fo/k;ihB

Xkka/kh th us 1920 es xqtjkr fo?kkihB dh LFkkiuk dhA mUgkus blds HkkX; vLr gkrs n[kdj mles iqu% ik.k QwVdus dk ,d lQy iz;Ru fd;kA mlds eq[; 12 उद्देश्य थे जिनमें कतिपय नीचे दिए जा रहे है— 1 विधापीठ में स्वभाषा को प्रधान पद दिया जएगा और सारी शिक्षा उसी भाषा में होगी। 2 राष्ट्रभाषा हिन्दी&fgUnqLrkuh dk उसमें आवश्यक स्थान रहेगा।

Okk/kkZ ;kstuk

गांधी जी के समय जीवन के शैक्षणिक तत्व इस वर्धा योजा मे आकार एकत्रित हो गए थे। उन्होने सन् 1937 में अपने पत्र 'हरिजन' दृारा अपनी शैक्षणिक मान्याताओं को प्रकाशित करना शुरू किया। आपके कान्तिकारी विचारों का बड़े जोरो शोर से खण्डन

होना शुरू हो गया। यह आवश्यक हो गया था कि शिक्षाशास्त्रियों और विद्वानों की ,d lfefr cuykbZ tk, vkSj ;g iz.;&dk;Z 22 vDVwcj lu~ 1937 dk ekjokMh हाईस्कूल वर्धा के वार्षिकोत्सव पर सम्पन्न हो सका। इसका सभापतित्व स्वयं गा/kh th us fd;kA

बुनियादी शिक्षा के उद्देश्य

परीक्षण और खोज में गाधीं जी की अटूट आस्था थी इसीलिए शिक्षा के क्षेत्र में भी वे vusdk iz;ोग करते रहे और अन्तिम निष्कर्ष ds :Ik में उन्होने भारतीय परिवेश के लिए बुनियादी शिक्षा अर्थात् बेसिक अवधारणा पर बल दिया।

अतः समाज के सदस्यों को जीवन की भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति करना आवश्यक है। राजनैतिक दृष्टि से ऐसे समाजोपयोगी नागरिकों की आवश्यकता है जो vius nkf;Roksa dks lQyrkiwoZd fuHkk lds rFkk lekt ds lg;ksxh dk;ZdrkZ esa Hkkx ysdj lekt dh mUufr fd fy, dk;Z dj ldsA lkekftd ,oa jktufrd nksuksa gh दृष्टिकोण से उपयोगी नागरिकों का निर्माण एकमात्र शिक्षा दृारा किया जा सकता gSA बेसिक शिक्षा श्रम एवं उत्पादन–कार्यों पर आधारित है। यg mRiknu&dk;ksZa ds nkjk बालकों में उन योग्यताओं कुशलताओं एवं दृष्टिकोणों का विकास करती है जो ykdrU=h; lekt dh LFkkiuk ds fy, ijeावश्यक है।

लोकतन्त्रीय शासन–व्यवस्था में प्रत्येक व्यक्ति शासन के प्रति उत्तरदायी होता है। jkT; ds izfr mlds drZO; c<+ tkrs gSA mls cgqr ls vf/kdkj Hkh izkIr gksrs gSA og bu drZO;ksa rFkk vf/kdkjksa dk fuokZg rHkh dj ldrk gSA tc og buds izfr ltx हो। इसके लिए ऐसी शिक्षा में इस तथ्य की ओर उसमें नागरिकता के गुणों का fodkl djsA

बेसिक शिक्षा में आर्थिक उद्देश्य को दो अथों esa fy;k x;k gSA izFke cPpksa nkjk बनाई गई वस्तुओं से विधालय के व्यय की आंशिक पूर्ति करना। दृितीय बेसिक शिक्षा समाप्त करने के पश्चात बालकों का बड़े होकर किसी उधोग दृारा अपनी जीविका को चलाना या आवश्यकताओं की पूर्ति करना। गांधी जी विचार था कि ckyd tc fo/kky; dks NksM+s rks og viuh thfodk dekus ds ;ksX; gks vFkkZr og lekt dh deku okyh bdkbZ ds :Ik esa gksAगांधी जी ने अपनी शिक्षा का एक प्रमुख उद्देश्य व्यक्ति में नैतिकता का समाविष्ट करना बताया। बुनियादी तालीम का उद्देश्य बालक को dsoy lk{kj djuk muds मस्तिष्क को अपरिपक्व कथनों एवं सूचनाओं से भर देना तथा परीक्षोत्तीर्णता मात्र नहीं है। इसका उद्देश्य बालक के व्यक्तित्व का उच्चतम विकास करना है ताकि वह पूर्ण मनुष्य तथा एक सुसंस्कृत और उपयोगी नागरिक बने। यह शिक्षा मुख्यतः बालकों की आदतों रचनात्मक शक्तियों तथा दृष्टिकोणों का विकास djrh gSAमहात्मा गांधी दृारा संचालित शिक्षा–योजना को जिस दृश्टिकोण से भी देखा

Vol. 9 Issue 2, February 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

tk, og lnL; ,oa 0;kid ifjyf{kr gksrh gSA गांधी जी की दृष्टि में व्यक्ति ईश्वर का प्रतिरूप है, vr% mldk mRFkku djuk ekuoh; एवं सामाजिक दृष्टि से अपेक्षित gSA ;g ;kstuk ckyd dh :fp;ksa ,oa iozfRr;ksa ds अनुकूल कार्य देकर उसकी शक्तियों का विकास करती है। बुनियादी शिक्षा के अर्न्तगत Je ds vk;kstu ,oa m|kx dh i/kkurk nkjk oxZ&Hksn dh xgjh [kkbZ dks ikVus dh व्यवस्था की गई है। शिक्षा–क्षेत्र में पूर्व प्रचलित वग अनुकूल शिक्षा–सिद्धान्त की समाप्ति की जाकर सामान्य एवं सार्वजनिक शिक्षा का आन्दोलन आरम्भ किया गया है। कार्य का बटँवारा समान रूप से करके समानता के आदर्श की रक्षा की गई है।

;g i)fr LokoyECu ij cy nsrh gSA ,oa 0;fDr dks viuk isjksa ij [kMs gksus dk volj प्रदान करती है। इसके फलस्वरू व्यक्ति एवं राष्ट्र दोनों की आर्थिक दृष्टि से mRiUu fofHkUu leL;kvksa dks dN lhek rd gy fd;k tk ldrk gSA ekuo dh fofHkUu iozfRr;ksa के विकासकाल का ध्यान रखते हुए उम्र के अनुसार शिक्षा–व्यवस्था gsrq bl i)fr dks pkj Hkkxksa esa foHkkftr fd;k x;k gSA ftlls mlsa vU; vuHkko Hkh ikIr gks ldsA बालक की रूचियों की पूर्ति हेतु पूर्व बुनियादी शिक्षा का आयोजन gSA mi;qDr okrkoj.k ds lkFk tu nkjk ckydksa dk lokZxh.k fodkl dj ;kstuk viuh eukoKkfud lnL;rk dk ifjp; nsrh gSA m/kksxksa esa tgka ckलक को बुनियादी शिक्षा feyrh gS ogh og mlds Hkkoh thou esa vkus okys dk;ksZa dk vH;kl Hkh dj ysrk है। बालक को कल्पनाशील बनाकर उसके संवेगों के उचित विकास दृारा व्यक्तित्व का xBu djrh gSA Ckfu;knh i)fr ckydksa dh leL;k,¡ lqy>kus dk volj iznku djrh gS mudh dYiनाशीलता का विकास करती है विभिन्न अनुभवों को प्राप्त करने के अवसर प्रदान करती है भाषा का विकास करती है और पारस्परिक विचार विमर्श में भावों के आदान–प्रदान से बालक के शैक्षणिक स्तर को सुदृढ़ बनाती है।
lk/kkj.k cqfu;knh fo?kky; xzkeh.k cu x, gSA fofHkUu m?kksxksadh i/kkirk us rks gekjh laLd`fr ,oa lH;rk dh ifjf/k dks vf/kd 0;kid cuk fn;k gSA xka/kh th nkjk ifrikfnr lR; vfgalk U;k; ,oa Lok/khurk ds fl)kUr ekuoekk= ds pfj= dk fodkl djus ,oa mls iw.kZ ekuo cukus ds fy, mi;qDr okrkoj.k dk l`tu djrs हैं। शिक्षा में सरलता लोक–कल्याण भावना एवं वर्गहीन शिक्षा का आयोजन नैतिक Lrj dk mRFkku dj vk/;kfRed fodkl dh {kerk iznku djrk gSA बुनियादी शिक्षा 7 से 14 वर्ष तक देने की सिफारिश जाकिर हुसैन–समिति ने की थी। पर प्रयोगों के ckn fgUnqLrkuh rkyheh la?k us bldh vवधि 8 वर्षों की कर दी। अब सामान्यतः इसका शिक्षाकाल 8 वर्षों का ही माना जाता है। बुनियादी शिक्षा के सम्पूर्ण पाठयकम को 8 वर्षों में विभक्त किया गया है तथा प्रत्येक भाग एक–एक कक्षा में पढ़ाया जाता हैं इस पाठयकम के शिक्षण के लिए निम्न पाँच प्रकार के अभ्यासाsa dk lgkjk fy;k

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 2, February 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

tkrk g&

1 शुद्ध तथा स्वस्थ जीवन का अभ्यास
2 LokoyEcu dk vH;kl
3 ehyk?kkxkk dk vH;kl
4 ukxfjd thou dk vH;kl rFkk
5 jpukRed fdz;kvks ,oa lkaLd`frd thou dk vH;klA

बुनियादी शिक्षा का आरम्भ पहली कक्षा में मौखिक भाषा के उपयोग से होता gSA बालक मातृभाषा के मौखिक ज्ञान को प्राप्त करके उसे पढ़ना–लिखना है। इसके बाद lkFk mls rdyh&m?kksx dk lk/kkj.k Kku Hkh fn;k tkrk gSA blds ckn vkxs dh d{kkvks esa og ehyk?kkx dh fdया में अधिकाधिक कौशल प्राप्त कर लेता है तथा इन्हीं fdz;kvks ds vk/kkj ij og xf.kr, **भाषा इतिहास,** dyk, Hkkxksy ,oa foKku dk **समवायित ज्ञान प्राप्त करता है। इस प्रकार आठ वर्षों में बालक एक उघोग में पारंगत हो जाता है तथा उसी के आधार से वह विभिन्न विषयों का ज्ञान भी प्राप्त कर लेता** gSA ij, **बुनियादी शिक्षा में यह आवश्यक नहीं है कि विभिन्न विषयों का ज्ञान** ehyk?kkx ds ek/;e ls gh fn;k tk,A **महात्मा गांधी ने बुनियादी शिक्षा के पाठयकम में निर्धारित समस्त विषयों** dks lEcfU/kr djkds i<kus ij cy **दिया है। यहाँ भाषा** bfrgkl, Hkkxksy, **नागरिकशास्त्र,** lkekftd foKku, dyk vkfn dks lefUor ;k lEcfU/kr djds lg&lEcU/k ds fu;e dk egRo Lohdkj djrs gq rFkk thou ds iR;sd mi;ksxh Kku dks m?kksx&dsfUnzr djus dh i)fr dk leFkZu djrs gSA m?kksx dks egRo nsrs gq, mUgksaus ^rdyh^, ^drkbZ^ ,oa ^cqukbZ^ dks leok; dk vk/kkj ekukA ijUrq, **कुछ समय प्श्चात् डॉ० जाकिर हुसैन ने पूना अधिवेशन में इस संकुचिम क्षेत्र को विस्तृत किया और तब समवाय के आधार निश्चित किए गए** ,d **शिक्षक का सर्वप्रथम गुण उसका सर्वांगीण विकसित व्यक्तित्व है। विघार्थी अपने जीवन की अधिकाशं बातें अनुकरण** nkjk lh[krs **और ग्रहण करते हैं। शिक्षा–मनोविज्ञान** crykrk gS fd ckyd esa lokZifFke vuqdj.k, **तदन्तर सीखने और अन्वेषण की प्रवृत्ति होती है। उनका भविष्य, सीखने तथा अन्वेषण की प्रवृत्ति ओर पूर्व के** vuqdj.kk ij vk/kkfjr gksrk gSA bl vuqdj.k djus rFkk lh[kus dh izfd;k esa **शिक्षक का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं।** cPps Hkh viuk O;fDrRo dk vknkj pkgrs gSA mudk O;fDrRo dk vknj ogh O;fDr dj ldrk gS , ftldk O;fDrRo Lo;a **विकसित हो। विघार्थी और शिक्षक का अत्यधिक गहरा सम्बन्ध है। ऐसी महत्वपूर्ण परिस्थिति में शिक्षकों का** व;fDrRo i.kZr% fodflr gksuk gh gSA

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 2, February 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell’s Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

बुनियादी शिक्षा–पद्धति में विघालयों का रूप आवासीय है। जब हम बुनियादी शिक्षा का ikB;dze n[krs gS rks ikphu x|:dqyks dk Lej.k gks vkrk gSA egkRek xka/kh us ;gk ij pkSchl ?k.Vs ds dk;Zdze dk fo/kku fd;k gSA cfu;knh शिक्षा का उद्देश्य ही है कि बालकों का शारीरिक मानसिक तथा नैतिक विकास हो। यह शिक्षा–प्रणाली उन्हें आर्थिक मानसिक एवं नैतिक दृष्टियों से भी स्वालम्बी बनाना चाहती है। tgk rd gks बुनियादी शाला के अहाते में बालकों के रहने के लिए छात्रावास तथा शिक्षकों के लिए vkokl&xg gksना चाहिए। शाला में एक सामूहिक jlksbZ?kj rFkk lkefgd :Ik ls cSBdj [kkus&ihus ds fy, dejk gksuk pkfg,, जिससे शाला का पूर्ण समाज एक ही स्थान पर भोजन कर सके। शाला इसके लिए सिद्धान्त यह होना चाहिए कि सरकार पैसा दे तथा बालक और शिक्षक श्रमदान nsA बुनियादी शाला में बगीचे या खेती आदि के लिए जमीन का होना आवश्यक है। इस जमीन पर खेती आदि करके बालको को iR;{k Kku fn;k tk ldrk gSA [ksrh vkfn ds fy, tgk ij [ksrh eqyk?kkx ds :Ik es gks, वहाँ तो 10 या 15 एकड़ जमीन शाला के पास होनी चाहिए। शाला के ckydks ds [ksyus vkSj 0;k;ke vkfn ds fy, eSnku Hkh gksuk pkfg,A [ksy dh शैक्षणिक महत्ता से महात्मा गांधी पूर्ण अवगत थे और अपने पाठयकम के समस्त vo;oks es mUgksus bls dk fo/kku fd;k gSA

ukjh शिक्षा की प्रगति के लिए यह आवश्यक है कि हम लोग सर्वप्रथम उन कारणों को समूल नष्ट करें जो इसके मार्ग में अवरोध हैं। देश में नारियों की अनिवार्य शिक्षा की व्यवस्था की जाए तथा शहर और देहात के क्षेत्र दमें पर्याप्त विघालयों की स्थापना हो , नारी शिक्षा मं शारीरिक बौद्धिक सांस्कृतिक एवं सामाजिक आदि समस्याओं पर विशेष ध्यान देनें की आवश्यकता है। बालिकाओं के विघाध्ययन को सुलभ–सुगम–आकर्षक बनाने के लिए छात्रवृत्तियों की व्यवस्था होनी चाहिए। भारत में Hkh vkt ckfydkvks ds lkFk&lkFk ikS< ukfj;ks dks i.kर्तः शिक्षित करने की योजना अनिवार्य और आवश्यक है। समाज और सरकार ही नहीं अपितु प्रत्येक पढ़े–लिखे व्यक्ति को समान रूप से देश की इस महान आवश्यकता की पूर्ति में अपनी संकीर्णता भेद–भाव तथा कट्टरपन को भूल कर सहयोग देने की आवश्यकता है तभी भारत का uSfrd vौर सांस्कृतिक उत्थान होगा और ऐसा होना बुनियादी शिक्षा दृारा ही सम्भव gSA

eqY;kadu vk/kqfud शिक्षण–पद्धति में एक नया प्रयोग है। इसमें उद्देश्य शिक्षा–अनुभव (शिक्षण परिस्थिति) और मूल्यांकन तीनों में समन्वय स्थापित किया जाता है। मूल्यांकन ls ge ;g Kku होता है कि उद्देश्य के लिए जो शिक्षण परिस्थियाँ प्रस्तुत की गईं muds nkjk Nk=ks es vis{kr 0;ogkj&ifjorZu gks jgs gS fd ugh vxj ugh rks इसके कारणों का विश्लेषण कर संशोधन प्रस्तुत किए जाते हैं। मुल्यांकन–प्रकिया के

Vol. 9 Issue 2, February 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

दृारा शिक्षक शिक्षण–विधि पाठ्य–पुस्तक पाठयकम और शिक्षण–साधन इन सभी का मूल्यन होता रहता है जिससे शिक्षाशास्त्रियों एवं शिक्षकों को शिक्षा में सुधान लोने के लिए दृष्टि मिल जाती है। शिक्षक को यह पता लग जाता है कि उनके शिक्षण में कहाँ त्रुटियाँ हैं। इससे उन्हें शिक्षण–पद्धति के सुधार में मार्ग–दर्शन मिलता है। पाठयकम–निर्माण को यह पता लग जाता है। कि पाठयकम कहाँ तक सुनिश्चित उद्‌देश्यों को ध्यान में रखकर बनाया गया है तथा वह छात्रों के मानसिक स्तर प्रौढ़ता vkj ox&Lrj d dgk rd vudy gA eY;kdu l fo?kkFkh dh vfHk:fp ;kx;rk vkfn की जानकारी होती है तथा उनके भविष्य के झुकाव का भी अनुमान लग जाता है। इस किया दृारा उनके शैक्षिक मार्ग–दर्शन में सहायता प्राप्त होती है। मूल्यांकन Nk=k dh ofDrd fofHkUurkvk dh tkudkjh nrk gA शिक्षक का उद्‌देश्य बालक के भीतर उत्तम शैक्षिक विकास करना हाता है। परीक्षा एवं मूल्यांकन शैक्षिक विकास के lk/ku ek= gA bud nkjk Nk=k d fofHkUu fodklk dh ek=k ukih tk ldrh gA अतः शिक्षण प्रकिया की अन्तिम पीढ़ी समीक्षा की प्रकिया होती है। तात्पर्य है कि शिक्षण की किया परीक्षा एवं मूल्यांकन की पद्धति से पूर्ण होती g ijh{kk dh lQyrk अच्छे प्रश्नों पर आधारित हैं।

महात्मा गांधी का शिक्षादर्शन जिन प्रमुख आधारस्तम्भों पर अवस्थित है उनमें 'शिक्षा में LokoyEcu^ ¼vkRefuHkjrk½ rFkk mldk fdlh ^ey m|kx^ ¼drkb&cukb c<bxhjh vkj [krh&ckjh½ d vk/kkj ij vofLFkr gkuk gA egkRek xk/kh Hkkjrh; lekt dh अत्यन्त शोचनीय आर्थिक अवस्था का सुधार चाहते थे। इसके लिए उन्होंने अपनी 'शिक्षा–पद्धति' की रूपरेखा प्रस्तुत की। इस पद्धति में 'हस्तकला' का स्थाना महत्वपूर्ण है। अतः कुल आलोचकों का विचार है कि बुनियादी शिक्षा–पद्धति, 0;kolाियक शिक्षा g, क्योंकि इस शिक्षा योजना के अनुसार शिक्षकों को अपना चेतन एवं विद्यालय का खर्च विद्यार्थियों दृारा हस्तकर्योंत्पादित सामग्री से निकालने की आशा की जाती है। इस सम्बन्ध में वस्तुस्थिति यह है कि महात्मा गांधी एक भविष्यद्राष्टा थे। उनका lolie[k mnश्य था 'भारत की भावी गरीबी को दूर करना।' भारतवासियों को भोजन, oL= vkj vkokl dh lfo/kk fey tk, , ऐसा वे अवश्य चाहते थे और इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए उन्होने पूरी चेष्टा की।

gekj uo;od Hkkfrdoknh ifjfLFkfr l yMu dk r;kj gk&blds fy, mue {kerk उत्पन्न करनी है और यह लक्ष्य तभी पूरा हो सकेगा जब हमारी शिक्षा तदुनूकूल होगी। अर्थात् शिक्षा की महिमामयी शक्ति के माध्यम से ही हम अपने उद्‌देश्य की पूर्ति करेंगे। इस उद्श्य की पूर्ति के लिए हमें शिक्षा के व्यावसायिक आदर्श को स्वीकार करना होगा। व्यावसायिक शिक्kk e gh ,lh {kerk g, जो हमारे किशोरों और नौजवानों में वह शक्ति उत्पन्न कर सकेगी, ftld vk/kkj ij o Hkkfrdoknh lH;rk d vudy

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 2, February 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

viu dk Icy vkj I{ke cuk Idxs rFkk ifrnfUnrk ds fy, rS;kj gks IdxsA व्यावसायिक शिक्षा को विश्व में व्याप्त वर्तमान भौतिकवादी सभ्यता एवं विषम Ikekfftd&vkfFkd ifjfLFkfr dk n[krs gq, ie[krk nus dk ;g vFkZ ugha gkrk gS fd ge viuh /kkfeZd, पारलौकिक आदि उद्देश्यों को सर्वथा भूल जाँए शिक्षा का उद्देश्य rks oLrqr% 0;fDrRo dk IokZxh.k fodkI gSA mIdh vkRek eu, मस्तिष्क, शरीर, pfj= ,ufrdrk, Ikekftdrk, राष्ट्रीयता एवं अन्तर्राष्ट्रीयता की भावना आदि व्यक्तित्व के समस्त अवयवों का विकास शिक्षा दृारा हो।

5 vDVcj, 1934 को शिक्षित युवकों में फैली gqbZ csdkjh dh tkp djus ds fy, rFkk mIls =k.k ikus ds fufer 0;ogkfjd I>ko ds fy, Ij rstcgknqj Ii dh v/;{krk esa ,d Ifefr dh fu;qfDr gqbZ Fkh, जिसने अपनी सिफारिश पेश करते हुए बतलाया कि पाचँवीं से आठवीं कक्षा तक अनिवार्य व्यावसायिक शिक्षा हो।' 1944 में सार्जेंट योजना ने अपनी रिपोर्ट में व्यावसायिक शिक्षा की महत्ता प्रतिपादित करते हुए हाइ स्कूलों की शिक्षा का विभाजन दो रूपों में कर दिया। प्रथम टेकनिकल तथा दूसरा ,dMfed ¼IkfgfR;d½A igys izdkj ds Ldwyksa esa 0;kolkf;d foKku rFkk 0;kikfjd विषयों को पढ़ाया जाना था जैसे इंजीनिय,Mkbx, शॉर्टहैण्ड, एकाउन्टेंसी आदि विषय। nwljs izdkj d स्कूलों में कला तथा विज्ञान की शिक्षा प्रदान की जाएगी।

यदि व्यावसायिक शिक्षा को इसके वास्तविक रूप में संगठित किया जाए बालक को mIdh :fp ds vuq:Ik 0;olk; puus dk volj fn;k tk, rFkk 0;ofLFkr mfpr शिक्षा–प्रणाली अपनाई जाए, rks ftu cqjkb;ksa vkSj =qfV;ksa dh dYiuk dh tkrh gS, वे कदापि उत्पन्न नहीं होंगी। व्यावसायिक शिक्षा बालकों को स्वावलम्बी बनाने के साथ–साथ उचित अर्थ में शिक्षित भी बना सकेगी। व्यावसायिक शिक्षा में व्यक्ति एवं mIds 0;fDrRo ds fodkI dh iw.kZ {kerk gSA ;fn ckydks dks i<+u&fy[kus ,oa fxurh Ih[kus vFkkZr~ iqLrdh; Kku izkIr djus ds cnys gkFk Is dk;Z djuk सिखाया जाए तथा अन्य विषयों की शिक्षा खेल और पाठयक्रम विषयों को भी सम्बद्ध dj fn;k tk,, तो वह व्यक्तित्व के पूर्ण विकास में सफल सहायक होगी। इस उद्देश्य dh iwfrZ Is IokZxh.k fodfIr 0;fDrRo ds okys ukxfjdksa dk fuekZ.k gksxk, tks ns[k dh Hkkouk Is lrFkk nqj gksxs vkSj mudk thou I[kh gksxkA

भारत अब तक सर्वप्रभुतासम्पन्न गणतन्त्र राष्ट्र है। इस समय हमारे समस्त कार्य–कलाप इस लक्ष्य और उद्देश्य को ध्यान में रखकर होने चाहिए क्योंकि हमें अपने बालकों का IokZxh.k fodkI djuk gSA ges mUgsa bI ;ksX; cukuk gS f dos iw.kZ I{ke gksdj viuh thfodk Ijyrk ,oa IxerkiwoZd pyk IdsA mUgs निराशा dh Hkkouk dk शिकार नहीं होना पड़े। अतः पाठयक्रम में व्यावसायिक शिक्षा की पूर्ण व्यवस्था अत्यन्त आवश्यक है। व्यावसायिक शिक्षा की योजनk ,oa {kekr iznku djus ds fy, ckydks

को उनकी प्राथमिक अवस्था की शिक्षा से ही कार्य प्रारम्भ करना होगा। 1934 में सर तेजबहादुर सप्रू की अध्यक्षता में जो शिक्षा–समिति गठित हुई थी,mlds fopkj loink मान्य हैं। उसमें निर्देश है कि बालकों को उनकी प्रारम्भिक शिक्षk ls gh 0;kolkf;d शिक्षा की व्यवस्था की जाए। आज अपनी उन्नति के लिए हमें व्यावसायिक शिक्षा की महत्ता को पूर्णतः स्वीकार कर प्रचलित करना होगा। व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त नवयुक doy viuh thfrdkiktu dh leL;k dk gh ljyrk vkj lxerkiod lek/kku ugh djxs, vfirq os viuh lkekftd vkj lkLdfrd mUufr eas Hkh ijk&ijk ;kxnku ns ldxA वर्तमान काल में जीविकापार्जन की शिक्षा का महत्व अधिक बढ़ गया है। जो शिक्षा उपयोगी हो उस पर बहुत अधिक बल दिया जाता है। शिक्षा के प्रति यह दृष्टिकोण कि शिक्षा का ध्येय केवल शिक्षा ही है, mles mi;kfxrk dk dkbl LFkku ugh, ii.k: is.k ifjofrir gks pqdk gA ;g ekuk tkus yxk g, वास्तविक शिक्षा ogh g tks 0;fDr dk lE;d :Ik ls viuk thou 0;rhr djus ds fufeRr rS;kj djs, og lq[kh cu ldA lq[kh ogh cu ldrk g,ftlds le{k vFkkiyfC/k dh leL;k dk विकट रूप नहीं उपस्थित रहे और इसके समाधान की क्षमता व्यावसायिक शिक्षा में ही gA

गांधी जी ने व्यक्ति में तीन प्रकार के गुणों पर विशेष जोर दिया है। व्यक्ति को निर्भय होना चाहिए। समाज के प्रति निष्ठा रखनी चाहिए और प्रkf.kek= ds ifr lnHkkouk रखनी चाहिए। अर्थात् गांधीजी मनुष्य की भौतिक शक्ति की भिन्न्ता मे उनकी आध्यात्मिक शक्ति की एकता को स्वीकार करते थे।

उनके दर्शन को अपनाने के लिए मुख्यतः तीन मार्ग हैं–

¼1½ lR; ¼2½ vfglk vkj ¼3½ isеA

vfglk nkjk 0;fDr lR;kxg dj सकता है। गांधीजी ऐसा मानते थे कि मनुष्य को deZ djus es ;k viuh leL;kvks dks gy djus es lR;&ekxZ dk voyEcu djuk चाहिए और इस बात का हमेशा ख्याल रखना चाहिए कि उसका विचार हिंसक तो नहीं gks jgk gA og deZ vfglke; le>k tkrk g, ftlls lalkj ds fylh ik.kh dk Hkh अनिष्ट न होता है। अर्थात् मनुष्य से प्रेममय बर्ताव करता हो। आगे इस प्रकार के दर्शन से शिक्षा में एक विशेष प्रकार का दर्शन निकला, ftl ij vk/kkfjr ubl rkyhe dk tUe gvk gA

गाधीं जी के शिक्षादर्शन पर प्रकृतिवाद आदर्शवाद एवं व्यवहारवाद का प्रभाव पड़k gA कुछ लोग ऐसा मानते हैं कि गांधीजी शिक्षा इन तीनों वादों का समन्वय मात्र ही है।गाधीं जी की प्रकिया में शिक्षक का भी उचित स्थान रहता है। शिक्षक बालक की विभिन्न रूचियों भली–बुरी प्रवृत्तियों आदि का अध्ययन कर उचित मार्ग–प्रदर्शन करे। किन्तु शिक्षा का mk/;e doy iLrdh; ,os ls)kfUrd gkus ds dkj.k ckyd dh

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 2, February 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

अभिरूचियों और बचपन की चंचलता नष्ट हो जाती है। गांधी जी शिक्षा का लक्ष्य तथा सत्य और खोज मानते थे। अतः वे शिक्षा में प्रकृतिवादी विधि को ही मानते थे। वे शिक्षा का लक्ष्य आदर्शवादी मानते थे। रूसो क fopkj l o cg|r&d|N iHkkfor FkA किन्तु प्रकृतिवादी विधि और गांधी जी की शिक्षण–विधि में अन्तर है। जहाँ जैविकीय–प्रकृतिवादी विधि ने विश्व में स्पर्धा को जन्म दिया है ,rFkk uo&Mkfofu;u fof/k fl)kUr u ^;kX;re gh thrk g^ dh Hkkouk dk tUe fn;k g ogk xk/khoknh शिक्षण–विधि विश्व से स्पर्द्धा का अन्त चाहती और सर्वोद्‌यवाद को जन्म देती है। tgk :lk dk ^,fey^ ukxfjd lekt l nj txy e pfj=oku ,lnkpkjh ,deB, pLr vkj lkglh curk g ,वहाँ गांधीवादी शिक्षा में बालक समाज में रहते हुए निजी dr0;k dk ikyu djr g, vkj thou d dMo&ehB ?kV ihr g, , सेवा शान्ति l;e vkj vkRekuHkfr nkjk viu 0;fDrRo dk lEi.k fodkl djrk gA

रूसो की शिक्षा–प्रणाली में शिक्षक का कोई स्थान नहीं रहता है। किन्तु, xk/khoknh शिक्षा–प्रणाली में शिक्षक का दायित्वपूर्ण LFkku jgrk gA :lk u ,fey dk lekt l nj, किसी भी आदर्श के अनुसार पालन–पोषण करने की परिकल्पना की होगी। इस तरह उनका उद्‌देश्य भी आदर्शवादी है। लेकिन, xk/kh th vkj :lk e vUrj ;g g fd गांधी जी चाहते थे कि बालकों का भरण–पोषण तथा शिक्षा sekt d Hkhrj viu thou dh nfud ifd;k djr g, lkekftd, भौतिक एवं औद्योगिक प्रतिवेशों के vuqdy gkA cPpk ij fdlh idkj dk Kku yknk ugh tk, , cfYd tk Hkh Kku mUg fey, mldk lEcU/k lekt l, idfr l ,o m|kx l bl idkj vuqcfU/kr gk fd o rhuk प्रतिवशों की गोद में पलते हुए स्वभावतः ज्ञान प्राप्त कर लें।

इस शिक्षा–प्रणाली दुारा महात्मा गांधी सत्य , Kku vkj vfgalk dh uohu T;kfr dk vkykd मानव–मात्र को देना चाहते थे। परम्परागत शिक्षा प्रणाली मनुष्य को धन की of) d fy, ikRlkfgr djrh gA ;fn शिक्षा के दृारा मनुष्य समाज मे प्रेम की वृद्धि की जाए तथा धन की प्यास मिट जाए तो मानव समाज सुखी और शान्त हो जाएगा। mue rc lPpfj=rk, नैतिकता और सन्तोष स्वयं आ जाएँगें। महात्मा गांधी ने शिक्षा d y{; dk lEckf/kr djr g, 31 tykb 1937 dk ^gfjtu^ i= e fy[kk Fkk& 'शिक्षा से मेरा अभिप्राय बालक की साक्षरता और मनुष्य के शरीर, eu rFkk vkRek d उत्कृष्ट एवं सर्वांगीण विकास से है। साक्षरता–शिक्षा की अन्तिम सीढ़ी नहीं है और न ही प्रथम सोपान है। यह तो पुरूष और स्त्री सभी को शिक्षित करने का एक साधन है। केवल साक्षरता अपने में शिक्षा नहीं कही जा सकती।' गांधीजी वस्तुतः भारतीय ckyd& ckfydkvk dk lokxh.k fodkl pkgr Fk ,d i{kh; ughA vr% mUgkau Hkkjr dh jktuhfrd, सामाजिक और आर्थिक अवस्था के अनुरूप ही एक शिक्षा–पद्धति

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 2, February 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

dh dYiuk dh vkj ;g ;ktuk Hkkjrh; lH;rk&lLd`fr d lo`Fkk mi;Dr gA ub तालीम या बुनियादी शिक्षा विशेष रूप में ग्रामीण क्षेत्रों के लिए अत्यन्त आवश्यक है जिसमे विधार्थी शिक्षा प्राप्त करने के बाद रोजगार योग्य हो जाए जो उसके जीवन में iljh lgk;rk dj ldrh gk ftues ;s fo/kkFkh lekt e mRiknd d :Ik e dk;l dj ld u fd flQ miHkkxrk dk gh dk;l djA

30 tuojh 1948 dk ukFkjke xkM l dh xkfy;k l xk/kh th dh gR;k gbA geu एक महान आत्मा को खो दिया लिखा है गांधी जी की मुत्यु एक मनुष्य की eR;q e dgh f/kd Fkh ,d ;x lekIr gk x;k FkkA okLro e egkRek xk/kh ;x पुरूष थे उनके बुनियादी शिक्षा तथा व्यवसायिक शिक्षा के विचार वर्तमान समय में भी उतने ही उपयोगी हैं जितने उनके समय में थे। जो वर्तमान शिक्षा सकिय है वह कहीं न कहीं अनुपयोगी एवं कौशल विभक्त उचित प्रतीत हो रहा है क्योंकि वर्तमान शिक्षा ckyd dk mldh {kerk dk fodkl dju e lgk;d fl) ugh gk jgh g ftll वह शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात भी किसी काम को करने योग्य नही हो पा रहा है जिस कारण बुनियादी शिक्षा की आवश्यकता विशेष रूप्k l ifjf{kr gkrh g rkd बालक शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात किसी न किसी काम के करने योगय हो जाए जो उसके आर्थिक विकास एवं राष्ट्र के विकास के लिए महत्वपूर्ण हो सके।

lnHk%&
1xk/kh th ekgunkl& ^lR; d i;kx^ ¼ vuqoknd dk'kh f=onh vgenkckn नवजीवन प्रकाशन)
2 ik.M vkj० एस० ^शिक्षा दर्शन^ vkxjk foukn iqLrd efnj
3 ikyhoky vkj d ^xk/kh thou vkj fopkj^
4 feRry 2019 ^शिक्षा के समाजशास्त्रीय आधार^ fnYyh fi;jlu
5 lyrk pkn fdj.k 2004 ^शिक्षा एक foopuk^ fnYyh jfo cDl
6 HkVkpk;l lolkfp 2004 ^egkRek vkj dfo vuqokn^ rkycj fxfj ub fnYyh नेशनल cqd VLV
7 Ukkरायण डा० इकबाल ^vk/kqfud jktuhfrd fopkj/kkjk,^ xUFk fodkl t;iqj 2005
8 Ckgjoky euk t dqekj ^Hkkjrh; jktuhfrd fpUrd^ हिमांश पब्लिकेशन उदयपुर 2014
9 धवन जी० एन० ^n ikfyfVdy fQykl Qh^ vkQ egkRek xk/kh
11 iVVkfe lfr jek;k ^dkxl dk bfrgkl^
12 रजनी शर्मा ^गांधी का जीवन गांधी का सन्देश^ 1981
13 डा० वी० पी० वर्मा ^vk/kqfud Hkkjrh; jktuhfr fpUru^
14 डा० पुरूषोत्तम नkxj ^vk/kqfud Hkkjrh; lkekftd ,oe jktuhfrd fpUru^

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 2, February 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

15 मो० क० गांधी ^ekbl ,Dlijhe!Vl bu VFk^ [k.M 2
16 xk/kh ekgunkl djepn 2013^ej lIiuk dk Hkkjr^ ubl fnYyh MkpeM cDl
17 डा० ओड लक्ष्मीलाल 2014 ^शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि^ t;ij jktLFkku fgUnh xUFk vdkneh
18 dमार कृष्णा ^शिक्षा के विषय पर महात्मा गांधी के विचार^ ;uLdk vol.23